अध्याय : तृतीय

मेवाड़ के जागीरदार एवं कतिपय ऐतिहासिक घरानों की पृष्ठभूमि

3.0 मेवाड़ के प्रमुख जागीरदार –

1) **बड़ी सादड़ी** – (हलवद काठियावाड़) यहाँ के झाला सरदार अज्जा महाराणा सांगा के संग खानवा के युद्ध में काम आये। इनके पुत्र सिंहा विक्रमादित्य के समय बहादुर शाह से युद्ध में चित्तौड़गढ़ पर हनुमान पोल में काम आये एवं आसा बनवीर उदयसिंह के समय युद्ध में काम आया। सुलतान भी उदयसिंह के संग युद्ध में सूरज पोल में काम आया। वीदा (झाला मन्ना) महाराणा प्रताप संग हल्दीघाटी युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुआ एवं देदा रणकपुर के युद्ध में काम आया।

2) **देलवाड़ा** – (झाला) सज्जा महाराणा विक्रमादित्य के समय हनुमान पोल पर बहादुर शाह के साथ युद्ध में काम आया। जैत सिंह अकबर से युद्ध में चित्तौड़गढ़ में काम आया। मान सिंह महाराणा प्रताप संग हल्दीघाटी में वीरगति को प्राप्त हुए एवं कल्याण सिंह ने गोगुन्दा के शाही थाने पर रक्षा करते हुए वीरगति प्राप्त की।

3) **गोगुन्दा** – (झाला) यहाँ के झाला शत्रुशाल ने रावल्या गाँव, गोगुन्दा के शाही थाने की सुरक्षा करते हुए वीरगति प्राप्त की।

4) **बेदला** – (मेनपुरी, उ.प्र. के चौहान) चन्द्र भान चौहान महाराणा सांगा संग खानवे के युद्ध में काम आया। संग्राम सिंह चित्तौड़ की रक्षार्थ अकबर से युद्ध में काम आया। ईश्वर दास – चाचा अकबर से चित्तौड़ की रक्षा में वीरगति को प्राप्त हुआ।

5) **कोठारिया** – (राजौर के चौहान) माणिक चन्द चौहान महाराणा सांगा के बाबर के संग पानीपत युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए। साहिब खान चित्तौड़ रक्षार्थ अकबर के युद्ध में काम आया एवं विजय सिंह होल्कर के साथ युद्ध में काम आया।

6) **बीजोलियाँ** – (गजनेर/मारवाड़ के पँवार) अशोक पँवार, महाराणा सांगा के समय बाबर से युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए।

7) **सरदारगढ़** – (काठियावाड़ी डोड़िया) राव सिंह डोड़िया, महाराणा लाखा की माता को बचाने, काबों से युद्ध करता हुए वीरगति को प्राप्त हुआ। भाण सिंह एवं साण्डा, बहादुर शाह से चित्तौड़ रक्षार्थ काम आये एवं भीम सिंह डोड़िया महाराणा प्रताप संग हल्दीघाटी के युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुआ।

8) **बदनोर** – (नागौर मारवाड़ से दूदा मेड़तिया राठौड़) रत्न सिंह राठौड़ महाराणा सांगा संग खानवा के युद्ध में काम आया। वीरम देव बाबर से एवं जय मल चित्तौड़ रक्षार्थ अकबर से युद्ध में काम आया। राम दास महाराणा प्रताप संग हल्दीघाटी युद्ध में एवं मुकन्द दास महाराणा अमर सिंह के समय रणकपुर के युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए। जसवन्त सिंह माण्डल के युद्ध में काम आए।

9) **बड़ी रूपाहेली** – (जयमल के प्रपौत्र श्यामल सिंह के वंशज) कुबेर सिंह राठौड़ मरहठों से युद्ध में काम आए। गोपाल दास, सिंधिया के साथ युद्ध में अपने तीन भाइयों, चार काका एवं 140 साथियों सहित वीरगति को प्राप्त हुए।

10) **नीमड़ी** – (महेचा राठौड़) वीरवर कल्ला राठौड़ अकबर से चित्तौड़ की सुरक्षा करते वीरगति को प्राप्त हुआ एवं बाघ सिंह महाराणा

प्रताप संग हल्दीघाटी युद्ध में काम आए। चन्दन सिंह महाराणा अमर सिंह के समय युद्ध में काम आए तथा मोहन दास ऊँटाले के युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए।

11) **झीलवाड़ा** – (गुजरात के सोलंकी) भैरव सिंह सोलंकी चित्तौड़ की रक्षार्थ भैरव पोल पर युद्ध में काम आए।

12) **तँवर** – (ग्वालियर के तँवर) रामशाह तँवर अपने तीन पुत्रों के साथ महाराणा प्रताप के संघ हल्दीघाटी के युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए।

13) **सोनगरा** – (पाली के चौहान) मान सिंह सोनगरा महाराणा प्रताप संग हल्दीघाटी के युद्ध में एवं भाण सिंह सोनगरा कुम्भलगढ़ के युद्ध में काम आए।

14) **केलवा** – (गुड़ा नगर से, जैतमाल राठौड़) वीदा राठौड़, सेवन्त्री में राणा सांगा को जयमल से युद्ध में बचाते समय वीरगति को प्राप्त हुए। नेत सिंह महाराणा उदय सिंह के समय चित्तौड़ युद्ध में काम आए। शंकर दास महाराणा प्रताप संग हल्दीघाटी रणक्षेत्र में, अपने दो भाइयों एवं पुत्र सहित वीरगति को प्राप्त हुए। नरहर दास महाराणा अमर सिंह के साथ युद्ध में लड़ा एवं किशन दास भौमट के भौमियों से लड़ाई में हल्दु घाटी में काम आया, इन्हें केलवा मिला। वीर भाण महाराणा राज सिंह के समय माण्डलगढ़ के युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए एवं आनन्द सिंह राठौड़, औरंगजेब से राजसमन्द की पाल पर तालाब एवं गौ रक्षार्थ वीरगति को प्राप्त हुआ, इन्हें आगरिया गाँव मिला।

मेवाड़ में बाहर से आये राजपूत वंश

झाला	चौहान	राठौड़	पँवार	डोड़िया	सोलंकी	भाटी	चावड़ा
बड़ी सादड़ी	बेदला	बदनौर	बिजौलिया	सरदारगढ़	रूपनगर	मोही	आर्ज्या
देलवाड़ा	कोठारिया	घाणेराव	बंबोरी		झीलवाड़ा	मुरोली	कलड़वास
गोगुन्दा	फलीचड़ा	श्रामपुरा	सियाणा		आकोला	वातीणो	वांस
ताणा	थामला	केलवा	कासेंडी		बंडोली	ऊँचा	
झाड़ोल	पिपली	बड़ीरूपाहेली			ढोरिया		
ओलादर		डाबला					
		नीमड़ी					
		आगरिया					
		लाधुड़ा					
		कणतोड़ा					
		जगपुरा					
		ईटाली					
		बामणिया					
		दाँतड़ा					
		रालवा					
		ढ़ोली					
		कटार					
		छोटीरूपाहेली					
		बरोल					

मेवाड़ का राज परिवार एवं कुटुम्ब की खापें एवं ठिकाने

राणावत	चुण्डावत	सांरगदेवोत	वीरमदेवोत	शक्तावत	पुरावत
बनेड़ा	सलूम्बर	कानोड़	हमीरगढ़	भीण्डर	मंगरोप
बागोर	आमेट	बाठरड़ा	खैराबाद	बान्सी	सिंगोली
करजाली	देवगढ़	लक्ष्मणपुरा	महुवा	बोहेड़ा	आठूण
शाहपुरा	बेगूं		सनवाड़	पीपल्या	गुरलां
शिवरती	चावण्ड		पहुँना	विजयपुर	गाडरमाला
कारोई	भदेसर		काकरवा	हींता	सूरावास
बावलास	मेजा		जयताणा	सेमारी	
नेतावल	कुराबड़		राणावतों –	रूद	
धनेरिया	करेड़ा		की सादड़ी	सियाड़	
भुणास	भैंसरोड़गढ़		वासनी	पानसल	
अमरगढ़	बैमाली			कूंथवास	
पीलाधर	बम्बोरा			बिनोता	
धरियावद	लूणदा				
बड़ल्यास	थाणा				
केर्या	भगवानपुरा				
आमलदा	लसाणी				
जामोली	साटोला				
परसाद	दौलतगढ़				
बाँसड़ा	जीलोला				
	ताल				
	ज्ञानगढ़				
	तलोली				
	भादू				
	संग्रामगढ़				
	बस्सी				
	आसींद				

3.1 भोमट के जागीरदार –

पानरवा का सोलंकी ठिकाना भूतपूर्व मेवाड़ राज्य के भोमट भूभाग में स्थित था। भोमट भू–भाग अरावली पर्वतमाला का सर्वाधिक बीहड़ और वनीय भाग है, जो सदियों से मैदानी भागों से अलग–थलग बना रहा। इस इलाके के मूल निवासी जनजाति समुदाय के लोग है, जो राजस्थान के अलावा मध्यप्रदेश, गुजरात और महाराष्ट्र के कुछ भागों में फैले हुए हैं। ये लोग सदियों से आत्मनिर्भर जीवन यापन करते रहे। उनकी सामाजिक व्यवस्था, धर्म एवं संस्कृति अपने प्राचीनतम रूप में बनी रही। राजनैतिक दृष्टि से भी लगभग ग्यारहवीं शताब्दी तक उनकी कबीलाई व्यवस्था निर्बाध रूप से चलती रही। किसी बाहरी राजनैतिक शक्ति ने उन पर अपना स्थाई अधिकार जमाने की कोशिश नहीं की। किन्तु भारत के उत्तरी पश्चिमी भाग से होने वाले विदेशी जातियों के अनवरत आक्रमणों के परिणामस्वरूप भारत के उत्तरी, मध्य एवं पश्चिमी भागों की शासक राजपूत जातियाँ शक्तिहीन एवं छिन्न–भिन्न होने लगी और उनकी शाखाऐं अपने मूल स्थानों से उखाड़े जाने के कारण अपने गुजारे के लिए नए स्थान ढूंढ़ने लगी। इसी प्रक्रिया के फलस्वरूप कतिपय राजपूतवंशी गिरोह भोमट के इस घने दुर्गम पहाड़ी भाग में घुस आये और धीरे–धीरे सम्पूर्ण इलाके को आपस में बांट लिया। आदिम सामाजिक एवं सैनिक व्यवस्था पर आधारित भील कबीलों को अधीन करने में उन्हें विशेष कठिनाई नहीं हुई। प्रारम्भ में यदुवंशियों ने दक्षिण की ओर से इस इलाके में प्रवेश किया और वाकल नदी के किनारे पर स्थित पानरवा वाले अत्यन्त दुर्गम वनीय पहाड़ी भाग पर अपना वर्चस्व स्थापित किया उसके बाद दो चौहान खींची एवं सोनगरा राजपूतवंशीय शाखाओं ने अलग–अलग समय में प्रवेश करके जवास एवं पहाड़ा तथा जूड़ा क्षेत्रों पर अपना अधिकार जमा लिया। उनके बाद सिरोही की ओर से सोलंकी राजपूतवंशियों ने इस इलाके में प्रवेश

करके यदुवंशियों से पानरवा इलाका छीन लिया और उत्तर में ओगणा तक एवं पश्चिम में उमरिया तक अपना विस्तार किया। ये घटनाऐं बारहवीं से चौदहवीं शताब्दियों के मध्य हुई। उसके बाद सिसोदियों की सारंगदेवोत शाखा ने मादड़ी एवं पंवारों ने पाटिया में अपना अधिकार जमाया। इन लोगों में अपनी भूमि अथवा क्षेत्र–विस्तार को लेकर आपस में लड़ाई नहीं हुई। ये राजपूतवंशी ठिकानेदार भी स्वतन्त्र राज्यों की भांति बने रहे। मेवाड़, मारवाड़, गुजरात आदि की ओर से भोमट पर प्रभुत्व स्थापित करने के प्रयास नहीं किए गए। अवश्य ही मेवाड़ के सिसोदियावंशी राजाओं के साथ उनके भावनात्मक सम्बन्ध रहे और लगभग समानता के आधार पर वे संकट काल में मेवाड़ के शासकों को सहयोग देते रहे, किन्तु अंग्रेज सरकार द्वारा अपना प्रभुत्व स्थापित करने से पहले वे मेवाड़ के महाराणा के अधीन जागीरदार नहीं रहे और वे स्वतन्त्र ठिकानेदार बने रहे।

भोमट में यादव, चौहान, सोलंकी और सिसोदिया राजपूतों का आधिपत्य –

भोमट के क्षेत्र में सबसे पहले यादव लोगों ने गुजरात की ओर से आकर बारहवीं शताब्दी में प्रवेश किया और उन्होंने गुजरात के ईडर इलाके से सटे हुए पानरवा भूभाग पर अधिकार कर लिया। उनके बाद चौहान राजपूत गिरोह भोमट में प्रविष्ट हुए। चौहान राजपूत दो अलग–अलग समूहों में आए। ये चौहान सांभर से निकल कर आये थे। एक समूह सांभर से निकल कर सीधा भोमट की ओर आया, वे सांभरिया चौहान कहलाये। दूसरा समूह सांभर से निकल कर पूर्व की ओर गया, जहाँ से लौटकर भोमट की ओर आया, वे पूरबिया चौहान कहलाए।[1] ये लोग प्रारम्भ में वागड़ में प्रविष्ठ हुए, उनमें से कुछ लोग भोमट में आए। कविराजा श्यामलदास ने उनको वागड़िया चौहान लिखा है।[2]

1262 ई. में जब मेवाड़ पर रावल तेजसिंह का शासक था, सांभर के राव लखमसी के वंशज गांगा और माना (माणक) दो चौहान भ्राताओं ने अपने सैनिकों के साथ वागड़ के देवसोमनाथ की ओर से भोमट के पूर्वी भाग में प्रवेश किया। वे स्वयं को खींची चौहान कहते हैं। उन्होंने भोमट के उस इलाके के भील सरगिरोह बांसिया जोगराज गमेती को मार कर 700 गांवों वाले खेड़ा (खरड़) भूभाग पर अपना अधिकार जमा लिया। दोनों भ्राताओं ने इस भूभाग को आपस में बांट लिया। गांगा ने पहाड़ा (पाड़ा) वाला भाग लिया और माना को जवास वाला भूभाग मिला। जवास खेरवाड़ा से छः मील दूर है। 1930 ई. में जवास ठिकाने में 78 गांव शामिल थे। ठिकाने की आमदनी 45,037 रूपये वार्षिक थी। ठिकाने की ओर से मेवाड़ दरबार को 2500 रूपये वार्षिक दसूंद के दिए जाते थे। जवास ठिकाने में मेवाड़ दरबार की चाकरी के तौर पर 43 हथियारबन्द सिपाही नौकर रखने पड़ते थे, जिनका उपयोग ठिकाने के पुलिस प्रबन्ध में किया जाता था। ठिकानेदार को मेवाड़ दरबार की ओर से अपने ठिकाने के भीतर प्रथम श्रेणी के दीवानी एवं फौजदारी अधिकार मिले हुए थे।[3]

पहाड़ा (पाड़ा) खेरवाड़े से 12 मील दूरी पर है। 1930 ई. में इस ठिकाने में 42 गाँव शामिल थे। ठिकाने की वार्षिक आय 15,238 रूपये थी। ठिकाने की ओर से मेवाड़ दरबार को 706 रूपये वार्षिक दसूंद के दिए जाते थे। ठिकाने में मेवाड़ दरबार की चाकरी के तौर पर 15 हथियारबन्द सिपाही नौकर रखे जाते थे। ठिकानेदार को मेवाड़ दरबार की ओर से अपने ठिकाने के भीतर मेवाड़ दरबार की ओर से द्वितीय श्रेणी के दीवानी एवं फौजदारी मिले हुए थे।[4]

चौहानों की दूसरी सोनगरा शाखा मारवाड़ की ओर से भोमट में प्रविष्ठ हुई। 1398 ई. में पत्ता चौहान की ओर से आकर जूड़ा के भील सरगिरोह

जुगजा गमेती को मार कर उसके गाँवों पर कब्जा कर लिया। जूड़ा से 13 मील दूरी पर है। 1930 ई. में इस ठिकाने से 176 गांव शामिल थे। ठिकाने की वार्षिक आय 43,103 रूपये थी और ठिकाने की ओर से 600 रूपये वार्षिक दसूंद मेवाड़ दरबार को दी जाती थी तथा 40 हथियारबन्द सिपाही नौकर रखे जाते थे। ठिकानेदार को अपने ठिकाने के भीतर प्रथम श्रेणी के दीवानी एवं फौजदारी अधिकार दरबार की ओर से मिले हुए थे।[5]

सोलंकी राजपूतों की शाखा सिरोही की ओर से भोमट में आई। 1478 ई. में अक्षयराज सोलंकी ने यादव राजपूत को मार कर पानरवा पर कब्जा किया। पानरवा कोटड़ा से 14 मील दूर पूर्व में वाकल नदी के तट पर बसा हुआ है। 1930 ई. में पानरवा में 101 गांव शामिल थे। पानरवे ठिकाने की वार्षिक आय 15,637 रूपये थी और उसको दसूंद के 500 रूपये वार्षिक मेवाड़ दरबार को देने पड़ते थे साथ ही पानरवा ठिकानेदार को 25 हथियारबंद सिपाही भी नौकर रखने पड़ते थे। इस ठिकाने को मेवाड़ दरबार की आरे से प्रथम श्रेणी के दीवानी एवं फौजदारी अधिकार मिले हुए थे।[6] पानरवा सोलंकी ठिकानेदारों का वर्तमान वंशधर राणा मनोहरसिंह है।

ओगणा का सोलंकी ठिकाना पानरवा ठिकाने से निकला। पानरवा में सोलंकी आधिपत्य के संस्थापक की चौथी पीढ़ी में हरपाल हुआ। हरपाल ने अपने दूसरे पुत्र नाहरू को ओगणा के निकट कई गांव पानरवा से थे। बाद में नाहरू ने उस समय ओगणा पर काबिज उदयराज ब्राह्मण से ओगणा छीन लिया था। ओगणा से 21 मील दूर उत्तर–पूर्व में स्थित है। ओगणा वाकल नदी के बायें किनारे पर बसा हुआ है। मेवाड़ दरबार ओर से ठिकाने में 46 गांव शामिल थे। ठिकाने की वार्षिक आय 10,750 रूपये थी और उसको 400 रूपये दसूंद मेवाड़ दरबार को देने पड़ते थे। ठिकानेदार को ठिकाने में 20 हथियारबंद सिपाही रखने पड़ते थे। ठिकानेदार को द्वितीय श्रेणी के दीवानी

एवं फौजदारी अधिकार मिले हुए थे।[7] ओगणा के सोलंकियों का वर्तमान वंशधर करणसिंह हैं।

भोमट में सोलंकियों के प्रवेश के लगभग पचास वर्ष बाद मेवाड़ के सारंगदेवोत सिसोदिया ठिकाने की एक शाखा ने मेवाड़ की ओर से भोमट के मादड़ी इलाके में आकर अपना अधिकार जमाया। 1546 ई. में ने मादड़ी पर कब्जा किया। मादड़ी खेरवाड़ा से उत्तर–पूर्व में 30 मील दूरी पर है। 1930 ई. में ठिकाने में शामिल थे। ठिकाने की वार्षिक आय 7375 रूपये थी और 500 रूपये वार्षिक दसूंद के मेवाड़ दरबार को दिए जाते थे। ठिकाने में 20 हथियारबंद सिपाही नौकर रखे जाते थे। ठिकानेदार को तृतीय श्रेणी के दीवानी एवं फौजदारी अधिकारी मिले हुए थे।[8]

भोमट ठिकानों द्वारा महाराणा की मातहती स्वीकार –

नवम्बर, 1830 ई. में ब्रिटिश सरकार की मेवाड़ एजेन्सी का कार्यालय उदयपुर से हटाकर नीमच स्थानांतरित किया गया। भोमट में फिर भी पूर्ण शांति कायम नहीं रही। पहाड़ी इलाके में मेवाड़ द्वारा नियुक्त सिंधी मुसलमान, के अत्याचारों के कारण भील हिंसात्मक कार्यवाही करने लगे। रूपल और मुंडोती के ठाकुरों के विरूद्ध शिकायतें प्राप्त हुई। मेवाड़ दरबार उनके विरूद्ध कार्यवाही करने में असफल रहा। उधर जूड़ा ठिकाने में कुछ हिंसात्मक घटनाऐं हुई।

3.2 मेवाड़ भील कोर की स्थापना (1841 ई.) –

इसी दौरान 30 जून, 1836 ई. को ले. कर्नल स्पीयर्स ने ब्रिटिश सरकार को सुझाव दिया कि भोमट से स्थायी शांति और सुप्रबन्ध के लिए भीलों की एक पल्टन बनाना आवश्यक है, जिसके व्यय में महाराणा से मदद ली जाए। स्पीयर्स ने अपने पत्र में यह राय भी दी कि ब्रिटिश सरकार को भी इस

पलटन को कायम करने में आर्थिक भार उठाना चाहिए, ''चूंकि यह वही पहाड़ी इलाका था, जिसके जंगलों में रहकर मेवाड़ के महाराणाओं ने मुगल बादशाह की शक्ति का सफलतापूर्वक सामना किया था।'' किन्तु ब्रिटिश सरकार इस बात पर अड़ी रही कि भील पलटन का सारा व्यय महाराणा ही वहन करें। महाराणा केवल इस बात पर राजी हुआ कि वह भोमट के ठिकानों से प्राप्त होने वाली दसूंद राशि तथा मेरवाड़ा एवं खेरवाड़ा की आय भील पल्टन के व्यय के लिए देगा। किन्तु वह राशि पर्याप्त नहीं थी।[9]

भोमट की वास्तविक (Defacto) शासक – ब्रिटिश सरकार –

उपरोक्त व्यवस्था के बाद कानूनन (Dejure) भोमट के ठिकानों का प्रबन्ध मेवाड़ दरबार के पास आ गया। केवल जूड़ा ठिकाने की देखरेख कोटड़ा छावनी के अंग्रेज अधिकारी असिस्टेंट पोलिटिकल सुपरिटेंडेंट के अधिकार में रही, किन्तु व्यावहारिक तौर पर (Defacto) भोमट पर प्रभुत्व मेवाड़ के लिए नियुक्त ब्रिटिश रेजिडेंट की मार्फत ब्रिटिश सरकार का बना रहा। मेवाड़ दरबार की ओर से इन ठिकानों में अपना प्रभाव अथवा वर्चस्व बढ़ाने के लिए कोई निश्चित प्रयास नहीं किए गए, उनका कारण मेवाड़ दरबार के शासन की कमजोरियाँ और दुर्व्यवहार तथा उसके अधिकारियों एवं कर्मचारियों की अक्षमता, घने जंगल और सुरक्षा व्यवस्था का अभाव भी कारण रहे। मेवाड़ दरबार में भोमट के इन ठिकानेदारों की क्या प्रतिष्ठा, पद एवं सम्मान रहे तथा दरबार में उनको किस श्रेणी में स्थान मिले, इन बातों को लेकर भी महाराणा और उनके बीच मतभेद चलते रहे। भोमिया सरदार मेवाड़ के जागीरदारों के मुकाबले 'भूम' में अपने स्वतन्त्र अधिकार के आधार पर प्रथम श्रेणी के जागीरदारों से भी ऊंचे स्थान एवं प्रतिष्ठा की मांग करते रहे। यह भी सही है कि अंग्रेज सरकार के हस्तक्षेप एवं सहयोग के कारण ही भोमट के इन ठिकानेदारों को मेवाड़ के महाराणा की अधीनता की स्थिति में लाया

जा सका था। शान्ति और व्यवस्था का कार्य सदैव अंग्रेज अधिकारियों के पास रहा। महाराणा का प्रशासन इस सीमा तक असफल रहा कि न केवल भोमट के भील क्षेत्र में अपितु मेवाड़ के शेष भील क्षेत्र मगरा में भी शांति कायम करने हेतु अंग्रेज सरकार को हस्तक्षेप करना पड़ा जिसमें मेवाड़ भील कोर का भी उपयोग किया गया।

3.3 मेवाड़ राज्य – शासन के अन्तर्गत भोमट के ठिकानेदारों के न्यायिक अधिकार –

नवीन व्यवस्था के अन्तर्गत मेवाड़ दरबार द्वारा भोमट में प्रशासन व्यवस्था की दृष्टि से खेरवाड़ा में एक हाकिम नियुक्त किया गया। इस भांति भोमट में सीधा ब्रिटिश प्रशासन समाप्त हो गया, किन्तु मेवाड़ भील कोर कमांडिंग अफसर आगे भी ब्रिटिश सरकार का अधिकारी बना रहा। मेवाड़ दरबार द्वारा भोमट के विभिन्न ठिकाने को निम्नानुसार न्यायिक अधिकार प्रदान किए गए[10] –

ठिकाना	ठिकानेदार का नाम	ठिकानेदार की उपाधि	जाति	वार्षिक आय (रूपये)	दसूंद (वार्षिक रूपये)	हथियारबंद सिपाही*	न्यायिक अधिकार	
							दीवानी	फौजदारी
जवास	तख्तसिंह	रावत	चौहान राजपूत	45037	2500	43	5000	(1)
पहाड़ा	बदनसिंह	रावत	चौहान राजपूत	15238	706	15	3000	(2)
मादड़ी	दौलतसिंह	रावत	सारंगदेवोत राजपूत	7345	501	14	1000	(3)
थाना	रणजीतसिंह	ठाकुर	चौहान राजपूत	5396	225	–	1000	(3)
छानी	मनोहरसिंह	ठाकुर	चौहान राजपूत	5695	500	–	1000	(3)
जूड़ा	शिवसिंह	रावत	चौहान राजपूत	43103	600	40	5000	(1)
पानरवा	मोहब्बतसिंह	राणा	सोलंकी राजपूत	15637	500	25	3000	(2)
ओगणा	उदयसिंह	रावत	सोलंकी राजपूत	10750	400	20	3000	(2)
उमरिया	विजयसिंह	ठाकुर	सोलंकी राजपूत	10000	150	–	3000	(2)
पाटिया	भवानीसिंह	ठाकुर	पंवार राजपूत	3000	201	–	–	–

1) प्रथम श्रेणी के फौजदारी अधिकार, अधिकतम दो वर्ष की सजा और 500 रूपये तक का जुर्माना।

2) द्वितीय श्रेणी के फौजदारी अधिकार, अधिकतम एक वर्ष की सजा और 300 रूपये तक का जुर्माना।

3) तृतीय श्रेणी के फौजदारी अधिकार, अधिकतम छः महीनों की सजा और 100 रूपये तक का जुर्माना।

Biographical sketches of the Chiefs of Mewar by Col. C.K.M. Walter के अनुसार।

Chiefs and Leading Families पुस्तक के अनुसार जवास के लिए 23 सिपाही और मादड़ी के लिए 14 सिपाही निश्चित किये गये थे। (राज्य प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, उदयपुर, ग्रंथ सं. 2680)

Ruling Princes, Chiefs and Leading Personages in Rajputana by C.S. Bayley (P. 182) के अनुसार जूड़ा के लिए 50 सिपाही निश्चित किए गए थे।

3.4 राणा पूंजा (1572–1610 ई.) –

28 फरवरी, 1572 ई. को महाराणा उदयसिंह का देहावसान गोगूंदा में हुआ। उसका ज्येष्ठ पुत्र प्रतापसिंह मेवाड़ का महाराणा बना। उसके राज्यारोहण के समारोह में पानरवे का राणा अपने धुनर्धर भीलों के साथ शरीक हुआ। किन्तु वह राणा दूदा था अथवा राणा पूंजा ? इसमें कोई संदेह नहीं है कि दूदा एक या दो वर्ष से अधिक पानरवे का शासक नहीं रहा। अधिक संभव है कि दूदा की मृत्यु महाराणा उदयसिंह की मृत्यु से पहले हो गई और महाराणा प्रतापसिंह की गद्दीनशीनी के जश्न में पानरवा का राणा पूंजा शरीक हुआ।

वह 28 फरवरी, 1572 ई. के दिन महाराणा प्रतापसिंह के राज्यारोहण के समय कुम्भलगढ़ में अपने धुनर्धारी भील सैनिकों के साथ मौजूद था। महाराणा प्रतापसिंह के राज्यारोहण उत्सव में मेवाड़ के सभी बड़े–छोटे सरदार जो चित्तौड़ के जौहर से बचे थे, शामिल हुए। उनके अलावा ग्वालियर का राजा रामशाह (रामसिंह) और उनके तीन पुत्र जोधपुर का राव चन्द्रसेन राठौड़, प्रताप का मामा पाली का राव मानसिंह सोनगरा अपने भ्राताओं सहित, ईडर का राव नारायणदास राठौड़ और सम्भवतः पठान सरदार हकीम खाँ सूर आदि मौजूद थे।

इस अवसर पर महाराणा प्रताप और उसके सहयोगियों ने मेवाड़ की स्वतन्त्रता की रक्षा की योजना बनाई और मेवाड़ के पहाड़ों में मुगल सेनाओं से लड़ने की छापामार युद्ध प्रणाली की रूपरेखा तैयार की। इस रणनीति की मुख्य बातें थीं –

1) 300 मील की परिधि वाले मेवाड़ के पहाड़ी प्रदेश के भीतर प्रवेश करने वाले सभी मार्गों की नाकेबंदी करना और वहां पर शत्रु के प्रवेश करते समय पहाड़ों के पीछे से निकल कर उस पर अचानक आक्रमण करके उसके जन–धन को हानि पहुँचाना। पहाड़ों में आने पर शत्रु के साथ इसी प्रकार की छापा मार लड़ाई करना।

2) राज्य के कोषागार और शस्त्रागार की सुरक्षा का प्रबन्ध करना।

3) पहाड़ों में आवागमन और संचार व्यवस्था तथा तीव्रगामी सूचना की व्यवस्था करना।

4) राजपरिवार, सामंतों, अधिकारियों आदि की स्त्रियों एवं बच्चों की सुरक्षित स्थलों पर रक्षा करना।

इन सभी उपरोक्त कार्यों में भीलों की प्रधान भूमिका रही। पानरवा राणा पूंजा के नेतृत्व में पानरवा और ओगणा के सोलंकी ठिकानेदारों ने इन सब कार्यवाहियों में बढ़ चढ़कर भाग लिया। भोमट के अन्य राजपूत ठिकानों मादड़ी, जवास, जूड़ा, मेरपुर, पहाड़ा आदि के सरदारों ने भी अपने भील सैनिकों के साथ राणा प्रताप को सहयोग प्रदान किया। चूंकि इन सब ठिकानों की अधिकांश प्रजा भील थी और सिपाही भी भील थे अतएव इन ठिकानेदारों के भीलों के सरदार अथवा कहीं कहीं भील सरदार लिखा मिलता है। इससे यह भ्रम फैला कि ये भोमिया राजपूत ठिकानेदार भोमिया भील हैं।

राणा पूंजा का भील सैनिकों के साथ हल्दीघाटी की लड़ाई में भाग लेना –

1572 ई. से 1575 ई. तक महाराणा प्रताप मुगल बादशाह अकबर के साथ ''आश्वासन देने और बहाना बनाने'' की कूटनीति द्वारा लड़ाई को टालता रहा। इस काल के दौरान उसने पहाड़ों में रक्षात्मक युद्ध की पूरी तैयारी कर ली। आखिरकार 1576 ई. के जून माह में कछवाहा राजकुमार मानसिंह 5000 मुगल सेना लेकर मेवाड़ पर चढ़ आया। उस समय महाराणा प्रताप ने मानसिंह की सेना के साथ पहाड़ों से बाहर निकल कर लड़ने का निश्चय किया। चेटक घोड़े पर सवार महाराणा प्रताप ने अपनी 3000 अश्वारोही और पैदल सेना तथा हाथियों को लेकर 18 जून, 1576 ई. के दिन हल्दीघाटी के बाहर निकलकर खमणोर के मैदान में मुगल सेना पर आक्रमण किया और प्रारम्भ में अधिकांश मुगल सेना को छः कोस तक भगा दिया। भील सैनिक मैदानी लड़ाई के अभ्यस्त नहीं थे, अतएव राणा पूंजा के भील सैनिक मेवाड़ी सेना के चंदावल भाग में पहाड़ों पर ही रहे। राणा पूंजा प्रताप की सेना के चंदावल भाग पर नियुक्त था जहां उसके साथ पुरोहित गोपीनाथ, पुरोहित जगन्नाथ, बच्छावत जयमल, मेहता रत्नचन्द खेतावत, जगन्नाथ, चारण जैसा और केशव आदि भी सेना के पिछले भाग में थे, जो लड़ाई के मैदान में नहीं उतरे।[11] वीरविनोद में राणा पूंजा को मेरपुर का राणा पूंजा और भीलों का सरदार लिखा है। जिसका आशय यही है कि राणा पूंजा भील सैनिकों का नेता था। आगे वीरविनोद में उसको पानरवे के भीलों का सरदार लिखा है।[12] सम्भव है उस समय तक पानरवे के सोलंकी ठिकाने का प्रभाव मेरपुर तक रहा हो।

3.5 मेवाड़ प्रशासन के विभिन्न कार्यालय (कारखाने) –

1)	धर्म सभा	2)	खासा पाणेरा
3)	सेज की ओवरी	4)	लवाजमा का कारखाना
5)	महक्मा खास	6)	जलेबदार
7)	छड़ीदार	8)	खासा रसोड़ा
9)	हिसाब दफ्तर	10)	महसाणी का विभाग
11)	बन्दुक दार	12)	फरास खाना
13)	कपड़दार	14)	पाण्डे की ओवरी
15)	अंगोलिया की ओवरी	16)	तंबोलखाना
17)	पिलकखाना	18)	बरछीदार
19)	तख्त का कारखाना	20)	घड़ीयाल वाला
21)	कौठार	22)	चौकी के सरदार
23)	अर्दली के जवान	24)	नगीना वाड़ी
25)	जंगी फौज, पुलिस, गार्ड	26)	बैण्ड
27)	रिसाला के सवार	28)	हाउस होल्ड
29)	अतिथि गृह	30)	स्पेशल ट्रेन
31)	मोटर कार	32)	कपड़ द्वार
33)	रोकड़ रा भण्डार	34)	सिल्हखाना

35) देवस्थान की कचहरी 36) रावली दुकान

37) शिल्पसभा 38) जनानी डोड़ी

39) छापाखाना 40) पुस्तकालय

41) विक्टोरिया हॉल 42) टकसाल

43) शिशु हितकारिणी सभा 44) नाव का कारखाना

45) संगीत प्रकाश 46) दवाखाना

47) षट्दर्शन 48) गुणीजनखाना

49) महेन्द्र राज सभा 50) जोतदान/मशालची

51) मेवाड़ का सैन्य प्रबन्धन – मेहकमा फौज, सज्जन इन्फेन्ट्री, भुपाल इन्फेन्ट्री, मेवाड़ भील कौर, नौकरिया री फौज – भील

3.6 मेवाड़ प्रशासन के सहयोगी – ब्राह्मण वर्ग –

प्राचीन मेवाड़ के पुरोहित चौबीसा ब्राह्मण थे। राणा कर्णसिंह के कोढ़ निकलने पर एक पालीवाल ब्राह्मण द्वारा तांत्रिक प्रयोग कर कोढ़ हटाने पर राणा कर्णसिंह ने पुरोहित की पद्वी चौबीसों से लेकर बड़े पालीवाल ब्राह्मणों को प्रदान की एवं चौबीसों को ड्योढ़ी की सेवा प्रदान की। वर्तमान में चौबीसों की पुरोहिताई डूंगरपुर, बांसवाड़ा में है। मेवाड़ में छोटे पालीवाल, नागदा, मेनारिया, शाकद्वीपी, औदिच्य, श्रीमाली, भट्ट मेवाड़ा, गौड़, आदि गौड़, आमेटा, सनाढ्य, छपनिया चौबीसा, सुखवाल, त्रिवेदी, नन्दवाना, दाधीच, सारस्वत, नागर, दशोरा, कान्यकुब्ज, पारीक, गर्ग, पुष्टिकर, गौरवाल/उतर क्रिया करने वाले, गुर्जर गौड़, मोड़, भार्गव, आचार्य, तिवारी, पुजारी, चौबे, भारद्वाज, चर्तुवेदी एवं अनेक गौत्र के पंच

द्रविड़ ब्राह्मणों को बोलबाला रहा। पुष्करणा, त्यागी एवं कई अन्य ब्राह्मण मेवाड़ में बाहर से आकर रहे।

पूर्व में एवं वर्तमान में पंच द्रविड़ ब्राह्मण वर्ग के नीति–नियम में तीनों कालों की संध्या, तर्पण, हवन पंच बली, दान गो ग्रास आदि नियम पूर्वक करते। पुरोहित का मुख्य कार्य महाराणा को धर्म के अनुरूप सलाह देना एवं राज परिवार के मांगलिक कार्यों का निष्पादन करवाना, धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन करवाना, राज परिवार में कथा कीर्तन का आयोजन करवाना होता था। राज परिवार में मृतक परिजनों की उत्तर क्रिया का कार्य गोरवाल ब्राह्मण किया करते थे। कर्मकाण्ड संबंधी कार्य कर्मान्त्री जी करवाते एवं ज्योतिष का कार्य आमेटा, दशोरा ब्राह्मण किया करते थे। शेष ब्राह्मण भी इसमें सहयोग करते एवं इनका अनुकरण करते।

3.7 मेवाड़ प्रशासन के सहयोगी वैश्य/जैन वर्ग –

कोठारी, भण्डारी, मेहता, गिलुण्डिया, 13 पंथी, मंदर मार्गी, बोहरा, हिरन, सामर, बोलिया, खण्डेलवाल, हुमड़, हिंगड़, इन्टोदिया, मुंदड़ा, गलगोटिया, दिवालिया, दधेय्या, बड़ा साजन, छोटा साजन, कर्णावट, सियाल, पोखरना, मादरेचा, मालीवाल, माहेश्वरी, चित्तौड़ा, चौपड़ा, लवाणिया, जालोरा, मरचुनिया, पंचोली, डिडवानियाँ, लाखोटिया, मोगरा, मंत्री, बाबेल, सिंघवी, गुप्ता, बाफना, भाटिया, चपलोत, अग्रवाल, सांखला, बंसल, खमेसरा, भाणावत, जैन, गोयल, सिंघटवाड़िया, लोढ़ा, गर्ग, मारू, भंसाली, ओसवाल, चण्डालिया, सोनी, सेठ, मोदी, डूंगरवाल, पोरवाल, नरसिंहपुरा, नलवाया, मुर्डिया, चोर्डिया, नंदवाना, गाँधी नागदा।

3.8 मेवाड़ रियासत के प्रसिद्ध ऐतिहासिक घराने –

1) **भामाशाह** – ओसवाल/कावड़िया (महाजन) पिता भारमल भामाशाह ने महाराणा प्रताप को संकटकाल में चूलिया ग्राम में 24 लाख रूपये एवं 20 हजार अशर्फिया भेंट की एवं युद्ध में भाग लिया। प्रताप ने इन्हें मेवाड़ का प्रधान बनाया। इनकी कैफियत थी – भामो परधानो करे, रामो कीदो रद्द। प्रताप के पुत्र अमरसिंह ने भामाशाह के पुत्र जीवा शाह को प्रधान नियुक्त किया। अमर सिंह के पुत्र कर्णसिंह ने जीवा शाह के पुत्र अक्षय राज को प्रधान बनाया।

2) **ताराचन्द** – ओसवाल जैन को प्रताप ने गोड़वाड़ का हाकिम नियुक्त किया। इन्होंने धन भी दिया एवं हल्दीघाटी के युद्ध में सक्रिय रहे। महाराणा स्वरूप सिंह ने इनके वंशज जयचन्द, कुनणा, वीरचन्द कावड़िया महाजनों को तिलकायत घोषित किया।

3) **सिंघवी दयाल दास का घराना** – सरूपरिया गौत्र के ओसवाल महाजन थे। इन्होंने महाराणा राजसिंह को गुप्त पत्र देकर उनके मारने की साजिश को नाकाम किया। इन्होंने राजसमन्द की पाल पर आदिनाथ जैन मन्दिर का निर्माण कराया। इनके पूर्वज सीसोदिया क्षत्रिय थे।

4) **पंचोली बिहारी दास का घराना** – भटनागर जाति का पंचोली (कायस्थ) फर्खसियर के समय बिहारी दास मेवाड़ का कानुनी सलाहकार था एवं महाराणा अमर सिंह (द्वि.) के समय महाराणा का प्रधान भी रहा।

5) **बड़वा अमर चन्द का घराना** – सनाढ्य ब्राह्मण, महाराणा प्रताप सिंह (द्वि.) के समय मेवाड़ का मुसाहिब आला बना। अरि सिंह (द्वि.)

के समय सिन्धी सेना का वेतन चुकाया। मेवाड़ का प्रधान बनाया। इन्होंने उदयपुर शहर की रक्षा की थी बाद में इनको विष देकर मरवाया गया।

6) **मेहता अगर चन्द का घराना** – इनके पूर्वज देवड़ा क्षत्रिय थे। खतरगच्छ के जिनेश्वर सूरि ने इनको जैन धर्म की दीक्षा दी तबसे ये ओसवाल कहलाये। महाराणा अरि सिंह ने इनको मॉडल का किल्लेदार बनाया। महाराणा भीम सिंह के समय इन्हें प्रधान बनाया गया। बाद में इनके वंशज शेरसिंह, स्वरूप चन्द एवं पन्ना लाल भी प्रधान रहे।

7) **मेहता राम सिंह का घराना** – जाल मेहता, जालोर परगना के राव मालदेव चौहान का कामदार था, वह हमीर की शादी के समय दहेज में आया था। आगे इस वंश में मेहता राम सिंह हुआ; वह दो बार प्रधान रहा। इनके वंश में जीवन सिंह हुए वह भी हाकिम रहे। इनके पुत्रों में तेज सिंह, मोहन सिंह एवं इन्द्र सिंह काफी प्रसिद्ध हुए। यह वंश बदनाम भी बहुत रहा।

8) **जोरावल मल बापना का घराना** – पटवा गौत्र के ओसवाल जैन थे। इनका मेवाड़ में किराने का व्यवसाय था व संघवी कहलाते थे। इन्हीं के वंश में सिरेमल हुए। उसने बी.ए. एवं बी.एस.सी. की परीक्षा एक साथ पास की एवं विज्ञान में सर्वप्रथम रहा। ये पटियाला राज्य में सेक्रेटरी रहे एवं होल्कर के राज्य में इन्दौर के डिप्टी प्राईम मिनीस्टर भी रहे।

9) **पुरोहित राम का घराना** – यह कोठारिया ठिकाने के पुरोहित रहे। इन्हें मास्टर ऑफ सेरेमनी का पद दिया गया।

10) **कोठारी केसरी सिंह का घराना** – यह मूलतः क्षत्रिय थे फिर ओसवाल जैन हो गये, महाराणा स्वरूप सिंह के समय इनकी रॉवळी दुकान कायम हुई और ये इनके हाकिम नियुक्त हुए एवं बाद में प्रधान भी बनें।

11) **महा महोपाध्याय कविराजा श्यामल दास का घराना** – ये चारण सरदार थे एवं साँखलों के पोलपात थे। दधिवाड़ा के होने से दधिवाड़िया कहलाये। इन्होंने उदयपुर राज्य का इतिहास लिखा, ब्रिटिश हूकुमत ने इन्हें महा महोपाध्याय की उपाधी दी।

12) **सहीवाले अर्जुन सिंह का घराना** – कायस्थ (भटनागर) सहीवाले अर्जुन सिंह को महकमा खास, सचिव का कार्य सौंपा गया ये कई जिलों के हाकिम रहे, राजकीय आदेशों को सही (प्रमाणित) करने का कार्य करते थे।

13) **मेहता भोपाल सिंह का घराना** – ओसवाल जैन भोपाल सिंह, राशमी एवं माण्डलगढ़ जिलों के हाकिम रहे।

14) **बरबड़ी एवं बारू**

15) **चील मेहता**

16) **पन्ना धाय**

17) **वशिष्ठ गोत्री ब्राह्मण**

पाद टिप्पणियाँ –

1) Ruling Princes, Chiefs and Leading Personages in Rajputana by C. S. Bayley, P. 180-182.

भोमट का हाल, राज. प्राच्य–विद्या प्रतिष्ठान, उदयपुर, ग्रंथ सं. 2680

2) वीरविनोद, लेखक कविराजा श्यामलदास, भाग – 1, पृ. 195–196

3) I. Ruling Princes, Chiefs and Leading Personages in Rajputana by C. S. Bayley, P. 180-182.

II. भोमट का हाल, राज. प्राच्य–विद्या प्रतिष्ठान, उदयपुर, ग्रंथ सं. 2680

III. Census of Mewar by Yamuna Lal Dashora, P. 22.

IV. Mewar under Maharana Bhupal Singh by Sir Sukhdeo, P. 23.

4) वही।

5) वही।

6) वही।

7) वही।

8) वही।

9) वही।

10) Mewar under Maharana Bhupal Singh by Sir Sukhdeo, P. 22 1935 ई. में पानरवा ठिकानेदार, मोहब्बतसिंह के अधिकार भी बढ़ाकर प्रथम श्रेणी के कर दिए गए। (राज्य अभिलेखागार, जिला उदयपुर, पत्रावली, भोमट सं. 1, वि.सं. 2001)

11) वीरविनोद, लेखक कविराजा श्यामलदास, भाग 2, पृ. 151

12) वही, पृ. 153 कतिपय लोग जो इतिहास के ज्ञाता नहीं हैं, वे राणा पूंजा को इस आधार पर भील होना बताते हैं कि उसको भीलों का सरदार लिखा गया है। सोलंकी राजपूत राणा पूंजा को भील बताना सर्वथा अनैतिहासिक एवं अप्रामाणिक है।